

पश्चिमी घाट पर बने बांध नदियों के जलग्रहण क्षमता को कर रहे हैं प्रभावित



(/divendra-singh)

by: Divendra Singh (/divendra-singh)

Published: 23 Jan 2019 Updated: 2019-01-23T16:55:55+05:30

फरीदाबाद: भारत के पश्चिमी घाट (सहाद्रि) के मध्य क्षेत्र में विकासात्मक गतिविधियां सदाबहार जंगलों और साल भर बहने वाली नदियों को प्रभावित कर रही हैं। हाल ही किए गए एक शोध में ये बात सामने आयी है।

शोधकर्ताओं ने देखा है कि कैसे बड़े पैमाने पर होने वाली गतिविधियों ने केंद्रीय पश्चिमी घाटों में पारिस्थितिकी तंत्र को नष्ट कर दिया है। जैव विविधताओं से भरपूर ये जगह समृद्ध पारिस्थितिकी, प्राकृतिक वन प्रणालियों और साल भर बहने वाली नदियों के लिए जाना जाता है।

ये अध्ययन विशेष रूप से काली नदी पर किया गया जोकि कर्नाटक राज्य के उत्तर कन्नड़ जिले से निकलती है और अरब सागर में मिलती है। ये नदी पश्चिमी घाट जितनी ही पुरानी है, यहां पर छह बांध हैं, जहां पर पेड़-पौधों की 325 प्रजातियां और जीव-जंतुओं की 190 प्रजातियां हैं।

ये भी पढ़ें : विकासशील देशों के लिये आपदा बड़ा मुद्दा, जलवायु परिवर्तन वार्ता में अड़े अमीर देश (<https://www.gaonconnection.com/desh-duniya/katowice-poland-climate-change-summit-42945>)

रिमोट सेंसिंग डाटा का प्रयोग करते हुए शोधकर्ताओं ने पाया कि साल 1973 से 2016 के बीच, वन क्षेत्र 85 प्रतिशत से घटकर 55 प्रतिशत हो गया। इसके साथ ही इस क्षेत्र में भूमि उपयोग का पैटर्न साल 1980-2000 के दौरान विकास संबंधी परियोजनाएं जैसे काली नदी पर बांध, कैगा परमाणु संयंत्र और डांडेली पेपर मिल स्थापित किए गए हैं। पेपर मिल ने बड़े पैमाने पर जंगलों को खत्म कर दिया है।



इस दौरान सदाबहार जंगल 62 प्रतिशत से 38 प्रतिशत तक कम हो गए और बड़े जल जलाशयों का निर्माण जंगलों को हटाकर किया गया। पारिस्थितिकी जलविज्ञान संबंधी इस बात का एक पैमाना है कि किसी क्षेत्र की पारिस्थितिकी पानी के चक्र और पानी के उपयोग में होने वाले बदलावों की उत्तरदायी है। उपयोग और वाष्पीकरण के कारण उपलब्ध पानी और खत्म हो गए पानी के अनुपात का आकलन करके इसे मापा जा सकता है।

ये भी पढ़ें : तमिलनाडु में जलवायु परिवर्तन के प्रभाव से भीतरी इलाकों में कम और तटीय जिलों में वर्षा की बढ़ोत्तरी होने के आसार

क्षेत्र में समाज और पशुधन की मांगों के लिए लगभग 2309 मिलियन क्यूबिक मीटर पानी की आवश्यकता होती है, जबकि पारिस्थितिकी तंत्र और जलीय जीवन को बनाए रखने के लिए लगभग 4700 मिलियन क्यूबिक मीटर की आवश्यकता होती है। विशेषण से पता चला है कि हालांकि काली नदी में घाटों और तटीय क्षेत्र में पर्याप्त जल आपूर्ति और बारहमासी धाराएं हैं, जो कि उच्च भूमि पर खेती और खेती के साथ समतल भूमि में स्थित हैं, इनमें रुक-रुक कर और मौसमी प्रवाह होता है जिसके कारण एक साल में चार से नौ महीनों में पानी की कमी हो जाती है। एक साल।

बारहमासी धाराएं उन क्षेत्रों में पाई गईं जिनमें 70% से अधिक वन कवर हैं, जो भूमि उपयोग के साथ पारिस्थितिकी और जल विज्ञान के बीच की कड़ी को दर्शाते हैं। भारतीय विज्ञान संस्थान के वैज्ञानिक और अनुसंधान दल के सदस्य टी वी रामचंद्र ने कहा, "वनस्पतियों की मूल प्रजातियों के साथ वन जलग्रहण की जल धारण क्षमता बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। वनस्पतियों की मूल प्रजातियों के साथ वन जलग्रहण की जल धारण क्षमता बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।"

"वनों की कटाई वाले गाँवों में 32,000 रुपए की तुलना में देशी जंगलों के आसपास के ग्रामीणों को प्रति वर्ष प्रति एकड़ 1.54 लाख रुपए की आय होती है। यह पानी और लोगों की आजीविका को बनाए रखने में देशी वनों की महत्वपूर्ण भूमिका की पुष्टि करता है, "उन्होंने आगे बताया।

1/24/2019

पश्चिमी घाट पर बने बांध नदियों के जलग्रहण क्षमता को कर रहे हैं प्रभावित

स्टडी में बताया गया है कि कैसे इंजीनियरों द्वारा अपनाई गई प्रबंधन प्रथा गंभीर जल की कमी के साथ नदी के जलग्रहण क्षेत्र में जल धारण क्षमता के क्षरण में योगदान दे रही है। सरकारी एजेंसियों को खाद्य और जल सुरक्षा के लिए वन आवरण बनाए रखने के लिए बेहतर प्रबंधन और संरक्षण रणनीति स्थापित करनी चाहिए। (इंडियन साइंस वायर)